



# Mobile Exhibition on the World of Rock Art

At

Puratattva Bhavan, Seminari Hills, Nagpur, Maharashtra

*(19 November-18 December, 2015)*



**INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS**  
New Delhi





## Report

On

## The World of Rock Art Exhibition

At

Puratattva Bhavan, Seminari Hills, Nagpur, Maharashtra

*(19 November-18 December, 2015)*

After the successful organization of the '**World of Rock Art**' exhibitions at Banaras Hindu University, Varanasi ( 5<sup>th</sup> to 8<sup>th</sup> March, 2013), then in Srimanta Sankardeva Kalashetra (SSK), Guwahati (12<sup>th</sup> April to 3<sup>rd</sup> May, 2013), at Odisha State Museum, Bhubaneswar (18<sup>th</sup> May to 23<sup>rd</sup> June, 2013), at Pondicherry University, Puducherry ( 25<sup>th</sup> July to 25<sup>th</sup> august, 2013), at National Gallery of Modern Art (NGMA), Bengaluru (3<sup>rd</sup> December 2013 to 3<sup>rd</sup> January 2014), at Centre for Heritage Studies (CHS), Tripunithura, Kerala ( 28<sup>th</sup> November to 28<sup>th</sup> December, 2014) and at Sangeetha Mahal, Palace Complex, Thanjavur, Tamil Nadu (6<sup>th</sup> May to 21<sup>st</sup> June, 2015). The exhibition is now hosted on the eve of **World Heritage Week** (19-25 November) at Puratattva Bhavan, Seminari Hills, Nagpur, Maharashtra in collaboration with the Archaeological Survey of India, Excavation Branch-I, Nagpur Circle. An exhibition on '**Indian Rock Art**' was also organized by IGNCA in the last week of August, 2014 at the World Rock Art Museum, Yinchuan, China. It remained open for the public till September, 2015.

As a precursor to the event, a press conference was held by the organizers of the event on 18<sup>th</sup> November, 2015 at Archaeological Survey of India, Excavation Branch-I, Nagpur Circle. The press agencies were briefed about the significance of the ignored field of the Indian rock art as well as of the studies and its importance for the posterity and the role that the media has to play in this regard. Almost all

the important newspapers highlighted the significance of the event which resulted in a huge attendance at the exhibition, children's workshop and special lectures.

The exhibition at Puratattva Bhavan was inaugurated by Professor (Dr.) Siddarth Vinayak Kane, Hon'ble Vice Chancellor of Rashtrasant Tukadoji Maharaj University, Nagpur, on 19<sup>th</sup> November, 2015. The welcome address in the inaugural function was given by Dr. Nandini Sahu, Superentending Archaeologist, Archaeological Survey of India, Excavation Branch-I, Nagpur Circle. Introduction to the exhibition was given by Dr. B.L .Malla, Project Director, IGNCA, New Delhi and the Presidential Address was given by Dr. Siddarth Vinayak Kane, the Hon'ble Vice Chancellor of RTM University, Nagpur. Dr. Sachin Tiwary of Archaeological Survey of India proposed the vote of thanks.



**Dr. S V Kane inaugurating the exhibition.**

As a part of the event, a special lecture on the '*Paschim Bharat avyam Chambal Ghati key Shailchitra Kala*' by Dr. Narayan Vyas was organized on 19<sup>th</sup> November at Puratattva Bhavan, Seminari Hills. A special workshop for school children titled 'Impressions' was organized on 20<sup>th</sup> November, 2015 at the same venue where students from various schools of Nagpur actively participated. It was followed by another special lecture titled '*Rock Art treasures of the Satpuras*' by Dr. Prabash Sahu, Associate Professor, Dept. of AIHC & Archaeology, Rashtrasant Tukadoji Maharaj University, Nagpur.



**Dr. Narayan Vyas and Dr. Prabash Sahu delivering their Special lectures on the occasion.**



All the events were well received by the common people, students and scholar community. The exhibition, special lectures and Children workshop were highly appreciated and got a very positive response from both print and the electronic media. For instance, “Dr. Kane in his presidential address expressed a need to equip the students of all disciplines about history and culture of the nation. Quoting the saying of Cicero as ‘one who is ignorant of the history remains child forever’ and mentioned that today the young generation is attracted towards medical and engineering education. Unfortunately, these youths are not aware about the great cultural heritage of the country. The educated youths are ignorant about their past. It is therefore, needed to conduct such events for the psychological development of the youths, he added” (*The Hitavada*, 20 November, 2015). As per recent update received from Excavation Branch-I, Archaeological Survey of India, Nagpur Circle, people in large numbers are visiting the exhibition every day. Through this event, we have been able, to a great extent, to propagate and highlight the activities of the IGNCA, especially about the importance and the objectives of the present Rock Art Project. How did humankind portray its earliest expressions? A visit to the exhibition, The World of Rock Art offers some answers.



**Dr. S. V. Kane delivering the presidential address.**

The present exhibition will remain open for public at the said venue till 18<sup>th</sup> December, 2015.



The participants at the Children's Workshop



## A General view of the Exhibition



The Exhibition was widely covered both by the print as well as the electronic media





**संरक्षण** फ्रांस जाते हैं सैपल, डेढ़ साल बाद मशीन व उपकरण मिलने के आसार

## देश में संभव नहीं है 'डेटिंग'

नागपूर । 18 नवंबर (लोकमत सेवा)

भले ही अफगनी ने आपदा लाने कि भारत में डेटिंग संभव नहीं है लेकिन वह वास्तविकता है. यहां बात शैलचित्र व प्राचीन कला की वास्तविकता से जुड़ी है. इस चरोहरों को डेटिंग को जगती है जो भारत में संभव नहीं है. दरअसल भारत में अब तक इसका लिए संरक्षण की मौजूद नहीं है. विश्व में यह काम बेल्जियम देश से केवल फ्रांस में होता है. कई बार संस्कृति मंत्रालय के कुछ विभाग आवश्यकता पड़ने पर सैपल फ्रांस ही भेजते हैं.

इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स (आईएनसीएआर) देश में 'आदि दृश्य' परियोजना पर काम कर रहा है.

संबंधित विभिन्न विभागों के सहयोग से उसने 15 हजार वर्ष पुराने शैलचित्र व पत्थरों पर की गई प्राचीनकालीन कलाकारी को डेटिंग तो कर ली है लेकिन इससे पहले

**मिल जाएंगी मशीनें**  
प्राचीनकालीन पेंटिंग, स्केचिंग आदि की डेटिंग करना फिलहाल संभव नहीं है. यह काम फ्रांस में होता है. इसका लिए मशीनें जरूरी हैं. मशीनें मिलने में डेढ़ वर्ष लग सकते हैं. की एम. मल्ला, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, आईएनसीएआर

को जरूरतों को डेटिंग करना उसके लिए संभव नहीं है. कौन सी कला कितने वर्ष पुरानी है, डायरेक्टिवन में इसका जवाब बहालकर्ण है.

किसी मुका में प्राचीनकाल की कलाकारी को डेटिंग करने के लिए संभव है. अब तक जो डेटिंग की गई है वह फिलहाल सटीक है. यह स्पष्ट है नहीं कहा जा सकता. दरअसल, देश में संरक्षण का अभाव है. इसके लिए पर्याप्त मशीन सज्जित कई उपकरण लगते हैं जो भारत में उपलब्ध नहीं हैं.

## रॉक ऑर्ट की प्रदर्शनी आज से विश्व धरोहर सप्ताह के तहत किया जा रहा आयोजन

नागपूर । 18 नवंबर (लोकमत सेवा)

विश्व धरोहर सप्ताह के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) व इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स (आईएनसीएआर) के संयुक्त तत्वावधान में 19 नवंबर से प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है. आईएनसीएआर भी यहां पहली बार प्रदर्शनी लगा रहा है. मुख्य रूप से सोमवरी हिल्स स्थित पुरातत्व भवन में सुचारु में.

एएसआई ने अपनी प्रदर्शनी के लिए दो विषय तय किए हैं. इसमें 'कलिंग' 'मॉनिगमंड आर्ट्स' और 'दुहरा' 'अर्गोनिंग विदर्भ' है. यह 25 नवंबर तक चलेगी. सुधवार की दोपहर स्थित लाईंस स्थित

एएसआई कवरलेस में पत्रकार सत्र में यह जानकारी दी गई. इस दौरान अश्विनी पुरातत्वविद व मंडल प्रभावी डॉ. नंदिनी साहू ने बताया कि रॉक आर्ट में विभिन्न चीजों का उभार कर सामने आया है. इनमें देश की बेहतरीन धरोहरों को संजोया जा रहा है. आईएनसीएआर के प्रोजेक्ट डायरेक्टर बी.एल. मल्ला ने बताया कि प्रतिवर्ष किसी एक राज्य में प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है. अब तक 8 राज्यों में यह किया गया है. नागपुर में एक माह तक चलने वाली प्रदर्शनी का विषय 'द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट्स' रखा गया है. इस विषय में सर्वेक्षण करने वाली और जानकारी के लिए सैमिनार व कार्यशाला का आयोजन भी होगा.

Thousand years of human history discovered by the rock paintings.

## शैलचित्रांनी उलगडला हजारी वर्षापूर्वीच्या मानवाचा इतिहास

**पुरातत्व सर्वेक्षण विभागाच्या 'शैलचित्र' प्रदर्शनाला गर्दी**

नागपूर : भविष्याचा वेध आणि भूतकालाचा मागोवा घेण्याबाबत मानवाची उत्सुकता सारखीच असते. आपल्या पूर्वजांच्या जागण्याचे संदर्भ जाणून घेण्याची ही आस अनेकांच्या दुष्टीने आजच्या जागण्याचा घ्यास ठरते. अशा ध्येयवेडांच्या संशोधनातून व अफाट परिश्रमातून भावी पिढ्यांसोठी त्या संदर्भाचा अमूल्य वारसा गोहोचविल्या जातो. इस पूर्व दहा हजार वर्षांच्या कालखंडातील आदिम जमातीने दगडावर व्यक्त केलेल्या इतिहासपूर्व कालखंडातील शैलचित्रांचे जागतिक प्रदर्शन

सोमिरी हिल्स येथील पुरातत्व सर्वेक्षण विभागाच्या कलादालनात लागले आहे.

केंद्र सरकारचा पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नवी दिल्ली यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'शैलचित्रांचे विश्व' (वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट) या प्रदर्शनाचे गुरुवार, १९ नोव्हेंबरपासून आयोजन करण्यात आले आहे. गुरुवारी राहुन नागपूर विद्यापीठाचे कुलगुरू डॉ. सी. पी. काणे यांच्या हस्ते प्रदर्शनाचे उद्घाटन करण्यात आले. यावेळी आयोजक नंदिनी साहू व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्राचे प्रकल्प संचालक बी. एल. मल्ला प्रामुख्याने उपस्थित होते.

प्रदर्शनात तीन प्रकारचे चित्रप्रदर्शन लावण्यात आले आहे. त्यात जगभरातील आशिया, आफ्रिका व ऑस्ट्रेलिया खंडांमधील अनेक शैल कलांचे दर्शन घडते. मध्य भारतात राजस्थान, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगड या पट्ट्यातील शैलचित्रांचे समूह येथे पाहण्यास मिळतात. भारतीय उपखंडातील मानवी संस्कृतीचा अत्यंत समृद्ध असा उसा या शैलचित्रांमिनितांना मांडला आहे. मानवाच्या भटक्या कालखंडातील चित्रांमध्ये हरणे, नीलगायी आदी जंगली प्राण्यांची चित्रे आदळात. बकऱ्या, बैलगाडी, म्हशी आदी पाळीव प्राण्यांसह फौजा, हत्तारे, अवजारे चित्रे येथे आहेत. पिक्टोग्राम्स ही रंगांची तर

पिक्टोग्राम्सही कोरलेली अशा दोन प्रकारांमध्ये ही चित्रे येथे आहेत. यापैकी बहुतांश चित्रे लाल, पिवऱ्या आणि काळ्या रंगातील आहेत. हा लाल रंग गेरूचा, पिवऱ्या चुनखडीचा तर काळा कोळशाचा आहे. यासह येथे गविल्लगड आणि आश्चर्यजनक विदर्भ असे दोन प्रदर्शन लावण्यात आले. यात पुरातत्व विभागाच्या बतीने सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या विदर्भातील विविध पुरातन वेस्तूंच्या चित्रांचे प्रदर्शन आहे. हे आदभूत चित्र प्रदर्शन नागपूरकरांना भूतकाळ आणि भविष्याचे दर्शन घडवित आहे.

THE TIMES OF INDIA, NAGPUR  
THURSDAY, NOVEMBER 19, 2015

## Expo to display 'World of Rock Art'

TIMES NEWS NETWORK

**Nagpur:** Indra Gandhi National Centre for Arts (IGNCA), New Delhi, in collaboration with Archaeological Survey of India (ASI), Nagpur, and Excavation Branch I, is organizing an exhibition on 'World of Rock Art' at ASI, Puratattva Bhawan, Seminary Hills, Nagpur.

The exhibition will be open from November 19 to December 20. Siddharthvinayaka Kane, Nagpur University VC, will inaugurate the exhibition on Thursday at 11.30am. Narayan Vyas will deliver lecture on 'Paschim Bharat Avyam Chambal Ghati ki Shel Chitra Kala' at 3.30pm.

A workshop for children will be held on November 20 at 12pm at the same venue. Later, Prakash Sahu will deliver lecture on 'The rock Art

ASI will celebrate World Heritage Week with exhibitions on 'Gawilgarh Hills' and 'Amazing Vidarbha'

Treasures of Satpuras' at 3:30 pm. The exhibition will be open for the public till December 20, 2015. This exhibition will also coincide with 'World Heritage Week' which will be celebrated from November 19 to 25.

ASI will celebrate the Heritage Week by putting up two exhibitions namely 'Splendours of Gawilgarh Hills' by Excavation Branch I, and 'Amazing Vidarbha' by Nagpur Circle at the same venue.

The exhibition 'World of Rock Art' displays thematic universality of art, to which both tangible and intangible aspects of heritage are associated.



## ASI, IGNCA exhibitions on rock art from today

■ Staff Reporter

INDIRA Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi, in collaboration with Archaeological Survey of India (ASI), Nagpur Circle, and Excavation Branch-I, is organising an exhibition on 'World of Rock Art' at ASI's Puratattva Bhavan, Seminary Hills, here from November 19.

Prof Dr Siddharthvinayak Kane, Vice-Chancellor, Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University (RTMNU), will inaugurate the exhibition in a function to be held at 11.30 am on Thursday.

On the same day, Dr Narayan Vyas will deliver a special lecture at 3.30 pm on 'Rock Art of Chambal Valley' in the Conference Hall at Puratattva Bhavan. On November 20, a workshop will be held for children at the venue of the exhibition. It will be followed by a special lecture by Dr Prabash Sahu on 'The Rock Art Treasures of Satpuras' at 3.30 pm. The exhibition will be open for the public up to December 20.

The said exhibition coincides with the 'World Heritage Week' being celebrated from November 19 to November 25. ASI also will be putting up two exhibitions namely 'Splendours of Gawilgarh Hills' by Excavation Branch-I, and 'Amazing Vidarbha' by Nagpur Circle, at the same venue. Nandini Bhattacharya Sahu, Superintending Archaeologist, ASI, Excavation Branch-I and Nagpur Circle; and Dr B L Malla, Project Director, Rock Art Department, IGNCA, told reporters while addressing a press conference on Wednesday that the exhibitions would be

celebrations of the earliest creativity of humankind. ASI exhibitions will be open for public from November 19 to November 25.

Addressing the press conference, Dr Malla said that the exhibition 'World of Rock Art' was being organised in Nagpur for the first time. It is a part of IGNCA's national project on rock art, which gives top priority for creating general awareness for school children, college and University students, and general public about this first creative art of humankind.

"The prehistoric art comes to signify underlying philosophies and the world view of ancient people and tells us about the soul of the community, its thoughts, beliefs and emotions. The exhibition on the world of rock art displays thematic universality of this art form, to which both tangible and intangible aspects of the heritage are associated," Dr Malla said.

Replying to a question, Dr Malla said that scientific dating has not been possible so far in Indian rock painting. So, there is more reliance on relative dating and not absolute dating. Asked about the issues involved in scientific dating of rock art in India, he said that India lacked appropriate and sophisticated technology and trained scientists. France has the best technology in this regard. "However, in India also, the situation is changing. Teams of scientists are being built now. Also, the modern equipment are in the process of being made available at Bhubaneswar, Lucknow, and Delhi," he added.



## 'World of Rock Art' expo in city from Nov 19

LOKMAT NEWS NETWORK  
NAGPUR, NOV 18

In a first ever opportunity for people of Nagpur, Nagpurkar's will be witnessing a world class rock art exhibition. The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi in collaboration with the archeological Survey of India, Nagpur Circle and Excavation Branch I, is organising an exhibition on the 'World of Rock Art' at Archaeological Survey of India, Puratattva Bhavan, Seminary Hills, Nagpur starting from November 19.

The exhibition will be held for one month duration. It is a part of the IGNCA's National Project on Rock Art, under this project the premiere agency focuses on creating general awareness for school children, college and university students, and general public about this first creative art of

the humankind. Dr B L Malla, Project director of IGNCA who will be coordinating the exhibition said that, from the very beginning of the human evolution, the early man started to record his world around him and his activities. He lived in the natural caves and shelter which he decorated with paintings and engravings on whatever he observed in his surroundings, mostly on nature and life.

These records goes back to 40,000 years as estimated by scholars. Paintings, pictograph of rock art are present in most of the constructions at all the continents except Antarctica. And there are quite similar in nature as the world at that time was beyond the political boundaries, said Malla. The formal inauguration ceremony of the event will be held at Puratattva Bhavan,

Seminary Hills, on November 19 at 11.30 am. Vice chancellor of RTMNU Dr Siddharth Vinayak Kane will inaugurate the exhibition as a chief guest of the programme. Dr Narayan Vyas will deliver a special lecture on 'Paschim Bharat avyam Chhambal Ghati ki Shel Chitra Kala' (Rock art of Chhambal valley) at 3.30 pm.

A children workshop

will be organised on November 20 at 12 pm followed by a special lecture by Dr Prakash Sahu on 'The Rock Art Treasures of Satpuras' at 3.30 pm. The exhibition will be open for public from November 20.

As the exhibition is coinciding with 'World Heritage Week' from November 19 to 25, the Archaeological Survey of India will be celebrating the World Heritage Week by putting up two exhibitions along with the month long exhibition of Rock art. 'Splendours of Gavilgarh Hills' by Excavation Branch I and 'Amazing Vidarbha' by the Nagpur Circle at the same Venue, informed Nandini Sahu Superintendent Archaeologist, ASI, Excavation Branch I and Nagpur circle.

The organisers appealed citizens to attend the exhibition and make it a grand success.

लोकातम शुक्रवार, दि. २० नोव्हेंबर २०१५

## शैलचित्रातून विदर्भाच्या संस्कृतीचे दर्शन

'गाविलगडाचे सौंदर्य' व 'विस्मयकारक विदर्भ' प्रदर्शन : पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभागातर्फे आयोजन



चित्रप्रदर्शनाच्या उद्घाटनानंतर अवलोकन करताना कुलगुरू डॉ. सिद्धार्थविनायक काणे. दुसऱ्या छायाचित्रात प्रदर्शनातील काही चित्रकॄती.

नागपूर : जागतिक वारसा समाहाचे अधिपत्य साधून पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग व नवी दिल्ली येथील इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित शैलचित्र प्रदर्शनातून विदर्भातील संपन्नता व प्राचीन संस्कृतीचे दर्शन घडत आहे. या प्रदर्शनाचे उद्घाटन गुरुवारी राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठाचे कुलगुरू सिद्धार्थविनायक काणे यांच्या हस्ते करण्यात आले. सेमिनरी हिल्स येथील पुरातत्त्व भवन येथे सुरु असलेले हे प्रदर्शन उद्या (२० नोव्हेंबर) पर्यंत चालणार आहे. विदर्भाने ऐतिहासिक वारसा, प्राचीन किल्ले व धार्मिक स्थळांच्या अमूल्य ठेवा असून पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग त्याचे संरक्षण

### विदर्भ पर्यटन समृद्ध

विदर्भ आणि त्याच्या आजूबाजूला परिसर हा प्राचीनकाळी कार समृद्ध होता. शिवाय आजही येथील पर्यटन समृद्ध आहे. येथील प्राचीन वारसा, किल्ले व धार्मिक स्थळांच्या बळगतीत पर्यटनाचा प्रचंड विकास होऊ शकतो. पर्यटन वाढल्यास नवीन रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होतील. पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभागातर्फे विदर्भातील अशा अनेक प्राचीन गोष्टींचे संशोधन करून त्याचे संरक्षण व संवर्धन केले जात आहे.

-नंदिनी साहू, पुरातत्त्व अधीक्षक, पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग

व संवर्धन करीत आहे. त्याचाच एक भाग म्हणून हा विभाग मागील चार वर्षांपासून मेळघाटमधील 'गाविलगडा' परिसरात संशोधनाचे काम करीत आहे. दरम्यान या विभागातून २४० पेक्षा अधिक प्राचीन गोष्टींचा शोध लागला आहे. विदर्भाच्या या संपन्न संस्कृतीचे

सामान्य जनतेला दर्शन द्यावे, या हेतूने 'गाविलगडाचे सौंदर्य' व 'विस्मयकारक विदर्भ' असे दोन प्रदर्शन एकाचवेळी आयोजित करण्यात आले आहे. यापेकी 'विस्मयकारक विदर्भ' या प्रदर्शनात विदर्भातील सुमारे ९३ ऐतिहासिक वास्तूंपैकी ४५ पेक्षा

अधिक वास्तूंचे छायाचित्रे लावण्यात आली आहेत. यात लोणार येथील गायमुख मंदिर, दैत्य सुदना मंदिर, खेअर कुंड, साफेगाव येथील महादेव मंदिर, चंद्रपूर जिल्ह्यातील चुराली येथील केशवनाथ मंदिर, बल्लारपूर येथील किल्ला, भोदक येथील चंद्रिकादेवीचे प्राचीन मंदिर, चामोशी येथील मार्कंडा मंदिर अशा विविध प्राचीन वास्तूंचा समावेश आहे.

याशिवाय आदिवासी कला, संस्कृती, त्यांच्या चालीरिती व परंपरा आदींचीही येथे छायाचित्रांसह माहिती देण्यात आली आहे. तसेच पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व मध्य क्षेत्रातील संस्कृतीचीही येथे माहिती देण्यात आली आहे. (प्रतिनिधी)

Rock art displaying the culture of Vidarbha